11 टीम से दूर रहने से गेंदबाजी...

अमर भारती
एक उम्मीद

11 अगस्त 2020 में खत्म होगा...

2030 तक देश में जरूरत का आधा पानी ही रह जायेगा!

जलसंकट की गंभीर चुनौती के समाधान हेतु पर्यावरणविद, डा. भरत राज सिह ने दिए सुझाव

उमेश यादव

देवा। स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेस, लखनऊ के महानिदेशक (तकनीकी) डॉ0 भरत राज सिंह ने उन्नत भारत योजना के तहत एस.एम.एस. कॉलेज द्वारा गोद लिये बाराबंकी के गांव के प्रवास के दौरान ग्राम्यवासियों को बताया कि भारत में लगातार दो-वर्षों से मानसून कमजोर रहने के कारण 33 करोड़ लोग यानी देश की एक चौथाई आबादी गंभीर सूखे की चपेट में रही। पश्चिमी और दक्षिणी राज्यों व उत्तर प्रदेश में औसत से कम बारिश की वजह से स्थिति और गंभीर हो गई है। नीति आयोग की वर्ष 2018 की रिपोर्ट के अनुसार दिल्ली, बेंगलुरु, चेन्नई, हैदराबाद जैसे 21 प्रमुख शहर 2020 तक शून्य भूजल स्तर तक पहुंच सकते हैं। इससे करीब 10 करोड़ लोगों की पहुंच से भूजल दूर हो जाएगा। विश्व संसाधन संस्थान (डब्ल्यूआरआई) की हाल की रिपोर्ट में भी कहा गया है कि दुनिया की एक चौथाई आबादी भीषणतम जल संकट से जूझ रही है। सिंचाई, उद्योग और नगर निगम-परिषद आधारभूत रूप से उपलब्ध जल का 80 प्रतिशत ज्यादा दोहन कर रहे हैं। समग्र जलप्रबंधन सूचकांक (सीडब्ल्यूएमआई) की रिपोर्ट में भीषण जलसंकट के प्रति आगाह किया गया है कि वर्ष 2030 तक देश में जरूरत का आधा पानी ही उपलब्ध हो पाएगा। ऐसे में सरकार ने यह साफ नहीं किया है कि 2024 तक हर गांव के घरों को पीने का पानी पाइप से पहुंचाने की अपनी महत्वाकांक्षी योजना को कैसे मूर्त रूप देगी । यही नही - 73वी स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त 2019) के अवसर पर लालकिले की प्राचीर से प्रधानमंत्री मोदी ने देश की जनता को सम्बोधित करते हुए यह चेताना नही भूले कि अपने देश की 130 करोड की जनता को मद्देनजर रखते हुये पानी की बचत, पर्यावरण के संरक्षण और प्लास्टिक को नकारने का समय आ गया है । इससे यह भी संकेत मिलता है कि सरकार के ये तीन मुद्दो मे से जल संरक्षण एक अहम मुद्दा है । उत्तर-प्रदेश के मुख्य-मन्त्री योगी आदित्यनाथ ने अब्दुल कलाम तकनीकी विश्व-विद्यालय के 19वें स्थापना दिवस (26 जुलाई 2019) को शोधकर्ताओं व छात्रों को प्रेरित करते हुऐ कहा था कि जल संचयन व संरक्षण हेतु नवाचार तैयार करे और अब एक जल-शक्ति मंत्रालय का भी गठन किया है, जो मंत्री डा.महेंद्र सिह के अधीन है, क्रियांवित होगा । यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि प्राचीन काल से पानी की कमी को दूर करने के लिए बावड़ी , झल्लरा, कट्टा, सैंड बोर, मदाक, जोहड़, पेमघरा, जैसे पारम्परिक उच्च पुरातात्विक महत्व की भव्य संरचनाएँ निर्मित हैं। पर्यावरणविद डॉ. भरत राज सिह ने बताया कि उन्होंने, शहरी क्षेत्रों में हरियाली के साथ-साथ हर कॉलोनी में जलसंचयन के लिये तालाबों के निर्माण का एक प्रोजेक्ट तैयार किया है । इससे शहर की कालोनियों में स्थित सभी पार्कों को भूमिगत जलसंचयन हेतु तालाब में परिवर्तित किया जा सकता है तथा कांक्रीट के पिलर पर छत डालकर, उसके ऊपरी सतह पर मिट्टी की भराई किया जाय, जिससे शहर की तमाम पार्क घास व फूल-पौधो से हरी-भरी भी रह सकती है। कॉलोनी की सड़कों के किनारे की नालियों को उन पार्कों तक जोडकर तालाब को भरा जा सकता है तथा उनके ओवरफ्लो को रिचार्जिंग वेल मे डाला जा सकता है ।